P.G.
SEM-II
Paper-9

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

गोदान

पूर्व से आगे

सोना का साहस और स्पष्ट ऐलान कि दहेज की मांग पर अड़े रहने के कारण वह विवाह नहीं करेगी, इस बाधा को समाप्त कर देता है। दहेज न देने के कारण होरी की छोटी बेटी रूपा का विवाह भी एक अधेड़ उम्र के रामसेवक से करना पड़ता है, जो रूपा के पिता की उम्र का है। झुनिया बाल-विधवा है, अतः उसे सारी उम्र अकेले अपनी इच्छाओं का दमन करते हुए ही काटनी है। गोबर द्वारा अपनाए जाने पर भी पंचायत और गांव के लोग विरोध करते हैं। स्पष्ट है कि विधवा को समाज की रूढ़ियों तथा अनीति के कारण अपना जीवन शारीरिक तथा मानसिक कष्टों के बीच बिताना पड़ा।

५. पारिवारिक विघटन की समस्या – जीवन मूल्यों में परिवर्तन तथा आर्थिक दबावों के कारण सम्मिलित परिवार टूटने लगे थे। प्रेमचन्द ने स्वयं अपने परिवार में सास-बहू के झगड़े देखे थे, उनकी सौतेली माँ की कभी उनकी जननी से नहीं बनी। विमाता के पुत्रों, अपने सौतेले भाइयों के लिए सब कुछ करने के बाद भी उन्हें बदले में उपेक्षा, अनादर एवं ईर्ष्या भाव मिले। गोदान में प्रेमचन्द की दृष्टि यथार्थवादी है। अतः पहले उन्होंने होरी तथा उनके दो भाइयों हीरा और शोभा को उससे अलग होते दिखाया है और बाद में पिता-पुत्र होरी तथा गोबर के बीच विचार-वैषम्य के कारण जो दरार पड़ती है, वह बढ़ती जाती है और गोबर अपनी पत्नी झुनिया के साथ गांव छोड़कर शहर चला जाता है। वह वहां मजदूरी करता है और अपनी बहन की शादी में भी गांव नहीं आता है।

इधर नगर में राय साहब तथा उनके बेटे रुद्रपाल में मतभेद है। ~~और मीनाक्षी~~ पिता के लाख समझाने पर भी अपनी शराबी पति से समझौता करने को तैयार नहीं है।

खन्नो और उसकी पत्नी गोविन्दी के बीच भी खटपट चलती रहती है। इन चित्रों के द्वारा लेखक ने सम्मिलित परिवारों के टूटने - बिखरने तथा दाम्पत्य जीवन में कटुता आने की समस्या की ओर संकेत किया है।

5. प्रदर्शनप्रियता या थोथी मर्यादा की समस्या - गांव में होरी अपनी मिथ्या प्रतिष्ठा के लिए ही द्वार पर गाय बांधना चाहता है। महतो कहलाने के लालच में गोबर के लाख समझाने पर भी खेती छोड़कर मजदूरी करने को तैयार नहीं होता है। धनिया मथुरा के घरवालों के मना करने पर भी दहेज में अपनी सामर्थ्य के बाहर सामान देती है और परिवार कर्ज में डूब जाता है। जाति से बहिष्कृत न हो। इसलिए होरी डंड भरता है, जिसके कारण वह कर्ज में डूबता जाता है और अंत में न उसके पास गाय होती है न बैल, न खेती के लिए खेत। वह अपना सर्वस्व खो देता है।

6. अंधविश्वास, रूढ़िवादिता परंपरागत आस्था - विश्वास के कारण उत्पन्न समस्याएं - गांव के लोग परंपरा प्रिय रूढ़ियों में जकड़े धर्मभीरु तथा लकीर के फकीर होते हैं। नगर के लोग विशेषतः धनवान तथा अभिजात्य वर्ग के लोग इन रूढ़ियों से मुक्त होते हैं। अतः गोदान के लेखक ने इन समस्याओं का अंकन गांव के संदर्भ में ही किया है। अंधविश्वासों परम्परागत जीवन मूल्यों रूढ़ियों के कारण ही होरी अनेक कष्ट उठाता है। यदि वह इससे मुक्त होता या गोबर का कहना मानकर इनके चक्कर में न पड़ता तो उसका जीवन इतना कष्टदायक न होता। गाय की हत्या होने पर प्रायश्चित करना चाहिए। जाति से बहिष्कृत न होने के लिए। शक्ति से बाहर कर्ज लेकर भी पंचों को प्रसन्न रखना चाहिए। घर

की इज्जत बचाने के लिए घर की तलाशी नहीं होने देनी चाहिए भले ही रिश्वत देनी पड़े। यह जानते हुए भी कि ऋणदाता धूर्त है, बेईमान है ब्याज के रूप में मूल का तिगुना वसूल कर चुका है, रसीद नहीं देता और वसूल हुई धनराशि को दुबारा मांग रहा है, होरी दातादीन, झींगुरी, नोखेराम की पाई-पाई चुकाने पर बल देता है, क्योंकि वह धर्मभीरु है, उसका विश्वास है कि ब्राह्मण की एक-एक पाई चुकानी चाहिए, वरना शरीर में फोड़ा फूट पड़ता है। अपनी मान्यताओं के कारण ही वह गांठ में पैसा न रहते हुए भी सत्यनारायण की कथा की थाली में पैसे डालता है। तीर्थ यात्रा से लौटने पर गांव वालों को प्रसाद बांटता है। धनिया पति की मृत्यु के समय गोदान के बदले दिन रात सुतली कातकर कमाए हुए बीस पैसे दातादीन को दान दे देती है। ईश्वरीय न्याय में विश्वास ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है ईश्वर ही बड़े छोटे, अमीर गरीब बनाकर भेजता है पिछले जन्मों के कर्मों का फल इस जीवन में भोगना पड़ता है भाग्य के लिखे को कोई नहीं मिटा सकता है यह अंधविश्वास ही होरी को यातना की भट्टी में झोंक देते हैं और उसे यमराज के हाथों में ढकेल देता है। इस प्रकार होरी के चरित्र का कारण उसकी धर्मभीरुता, रूढ़िवादिता तथा झूठी थोथी मर्यादा बनाए रखने की हठवादिता भी है।

सारतः कहा जा सकता है कि 'गोदान' में प्रस्तुत समस्त समस्याएँ उस समय के ग्रामीण परिवेश की यथार्थ दर्शाते हैं।